शेख़ फ़रीद – सबद ७२

फरीदा भंनी घड़ी सवंनवी टूटी नागर लजु ॥

सलोक, सेख फरीद, गुरु ग्रंथ साहिब, १३८१

फरीदा भंनी घड़ी सवंनवी टूटी नागर लजु ॥
जो सजण भुइ भारु थे से किउ आवहि अजु ॥६९॥

सार: सुशोभित रूप, सुरक्षा कवच का काम करता है जबकि सामाजिक प्रतिष्ठा झूठी स्थिरता पैदा करती है कि हम सदा रहेंगे। बस एक पल में, दोनों टूट सकते हैं। शांतचित्त भी, अपनी कमज़ोरियाँ दर्शा सकता है और स्थिरता भी अनिश्चितता में परिवर्तित हो सकती है। जब शरीर इस सावधानी से बनी छवि को संभाल नहीं पाता तब हमें उस सच्चाई का सामना करना पड़ता है जिसे टाला नहीं जा सकता। अपनी कच्चेपन की सच्चाई और ईमानदारी से ही हम अपनी असली ताक़त को पहचान सकते हैं।

फरीदा भंनी घड़ी सवंनवी टूटी नागर लजु ॥
फ़रीद कहते हैं कि बहुत ख़ूबसूरती से बनाया गया पात्र टूट गया है जिससे उसकी शोभा समाप्त हो गई है। यह दर्शाता है कि जब अहंकार की नासमझी समाप्त हो जाती है तब उससे पैदा होने वाले भ्रम भी अपना महत्त्व खो देते हैं।

जो सजण भुइ भारु थे से किउ आवहि अजु ॥६९॥
वह प्रियजन, जो कभी इस धरती पर दृढ़ता से खड़े थे, अब कैसे लौट सकते हैं? यह सच हमारे अस्तित्व की नाज़ुकी और उन लगावों को दिखाता है जो शरीर के खोने के साथ ही समाप्त हो जाते हैं। (६९)

तत्त्व: शेख़ फ़रीद शरीर और हमारी दुनियावी पहचान को एक ऐसे पात्र के रूप में दिखाते हैं जो टूटने के लिए बना है, जो भ्रम के अंत और हमारी हैसियत के अंत की निशानी है। यह गहन जागृति

अस्तित्व के कुछ समय के लिए रहने वाले स्वभाव और उन भ्रमों को सामने लाती है जिन्हें हम आख़री सच मानकर पकड़े रहते हैं। जिसे हम वास्तविकता मानते हैं, वह सामयिक चीज़ से ज़्यादा कुछ नहीं है जिसको केवल ऊपरी दिखावे से जोड़ा हुआ है। इस समझ को अपनाने से हम यह पहचान पाते हैं कि हमारी पहचान का कितना कम हिस्सा भोगने के लिए है और कितना सतह से परे गहन अर्थ की खोज के लिए।

सबद व्याख्या **विनइंदर कौर** और **अमरदीप सिंह**

Oneness In Diversity Research Foundation

वेबसाइट: OnenessInDiversity.com

ईमेल: onenessindiversityfoundation@gmail.com